● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

११. रोजी और निक्की

–महादेवी वर्मा

जन्म : २६ मार्च १९०७ फरुक्खाबाद (उ.प्र) **मृत्यु :** ११ सितंबर १९८७ **रचनाएँ :** यामा, मेरा परिवार, पथ के साथी, अतीत के चलचित्र
परिचय : महादेवी वर्मा जी कवयित्री, स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद के रूप से प्रसिद्ध हैं । आपके रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध भी प्रसिद्ध हैं । इन रेखाचित्रों के माध्यम से लेखिका ने अपने बचपन की मधुर स्मृतियों एवं प्राणियों के स्वभाव को चित्रित किया है ।

खोजबीन

विभिन्न पशु-पक्षियों के आवास पर चर्चा करते हुए उनके निर्माण की विधि अंतरजाल की सहायता से प्राप्त करो ।

खोजबीन के लिए आवश्यक सोपान :

विद्यार्थियों ने कौन-कौन-से आवास देखे हैं, बताने के लिए प्रोत्साहित करें ।
* आवास की आवश्यकता, महत्त्व तथा उनके प्रकार पर चर्चा करें ।
* आवास संबंधी जानकारी हम कहाँ-कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं, पूछें ।
* अंतरजाल से उपयोगी जानकारी समझकर उसको डाउनलोड करने के लिए कहें ।
* सूचनाओं/जानकारियों की सुरक्षा पर मार्गदर्शन करते हुए प्रयोग करवाएँ ।

मेरे अतीत बचपन के कोहरे में जो रेखाएँ अपने संपूर्ण महत्त्व के विविध रंगों में उदय होने लगती हैं, उनके आधारों में तीन ऐसे भी जीव हैं, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी मेरी स्मृति में छुपे-से हैं । वे हैं निक्की नेवला, रोजी कुतिया और रानी घोड़ी ।

रोजी की जैसे ही आँखें खुलीं, वैसे ही वह मेरे पाँचवें जन्मदिन पर पिता जी के किसी राजकुमार विद्यार्थी द्वारा मुझे उपहार रूप में भेंट कर दी गई । स्वाभाविक ही था कि हम दोनों साथ ही बढ़ते रहे । रोजी मेरे साथ दूध पीती, मेरे खटोले पर सोती, मेरे लकड़ी के घोड़े पर चढ़कर घूमती और मेरे खेल-कूद में साथ देती । रोजी सफेद थी किंतु उसके छोटे सुडौल कानों के कोने, पूँछ का सिरा, माथे का मध्य भाग और पंजों का अग्रांश कत्थई रंग का होने के कारण कत्थई किनारीवाली सफेद साड़ी की सबल रंगीनी का आभास मिलता था । वह छोटी पर तेज टैरियर जाति की कुतिया थी । हम सबने उसे ऐसा साथी मान लिया था, जिसके बिना न कहीं जा सकते थे और न कुछ खा सकते थे ।

सबसे छोटा भाई तो हमारी व्यस्तता में साथ देने के लिए बहुत छोटा था परंतु मैं, मुझसे छोटी बहिन और उससे छोटा भाई दोपहर भर बया चिड़ियों के घोंसले

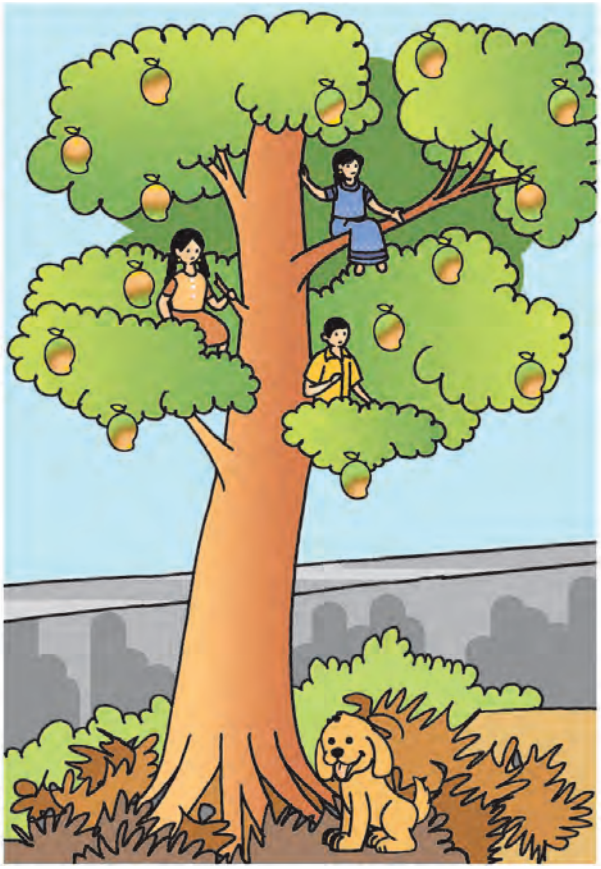

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ रेखाचित्र का मुखर वाचन करवाएँ । चर्चा एवं प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के प्रमुख मुद्दों को स्पष्ट करें । विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए पाठ की किसी घटना को कहानी में रूपांतरित करके सुनाने के लिए कहें ।

वाचन जगत से

पक्षी प्रेमी सलीम अली की पुस्तक का कुछ अंश पढ़ो और कक्षा में चर्चा करो ।

देखते, बबूल की सूखी और बीजों के कारण बजने वाली छीमियाँ बीनते घूमते रहते ।

घूमते-घूमते थक जाने पर हमारा प्रिय विश्रामालय एक आम के वृक्षों से घिरा सूखा पोखर था, जिसका ऊँचा कगार पेड़ों की छाया में आठ-नौ फुट और खुली धूप में चार-पाँच फुट के लगभग गहरा था । कई आम के पेड़ों की शाखाएँ लंबी-नीची और सूखे पोखर पर झूलती थीं । सूखी पत्तियों ने झड़-झड़कर सूखी गहराई को कई फुट भर भी डाला था । हम डाल पर बैठकर झूलते रहते । घूमने के क्रम में यदि हमें कोई मकोई का पौधा या करौंदे की झाड़ी फूली-फली मिल जाती तो नंदनवन की प्रतीति होने लगती ।

हमारे इस भ्रमण में रोजी निरंतर साथ देती । जब हम डाल पर बैठकर झूलते रहते, वह कगार के सिरे पर हमारे पैरों के नीचे बैठी कूदने के आदेश की आतुर प्रतीक्षा करती रहती । जब हम पोखर की परिक्रमा करते, वह हमारे आगे-आगे मानो राह दिखाने के लिए दौड़ती और जब हम मकोई और करौंदे एकत्र करने लगते, तब वह किसी झाड़ी की छाया में बड़े विरक्त भाव से बैठी रहती । गर्मी के दिनों में आम के पेड़ों से छोटी-बड़ी अंबियाँ हवा के झोंके से नीचे गिरती रहतीं और पत्तियों के सरसराहट भरे समुद्र में से उसे वह खोज लाती । कच्ची कैरी की चेपी लग जाने से बेचारी का गुलाबी छोटा मुँह धबीला हो जाता परंतु वह इस खोज कार्य से विरत न होती ।

दोपहर को पिता जी कालेज में रहते और माँ घर के कार्य में या छोटे भाई की देखभाल में व्यस्त रहतीं । रामा बाजार चला जाता और कल्लू की माँ या तो सोती या माँज-माँजकर बर्तन चमकाने में दत्तचित्त रहती । वे सब समझते कि हम लोग या तो अपने कमरे में सो रहे हैं या पढ़-लिख रहे हैं । हम कुछ ऊँची खिड़की की राह

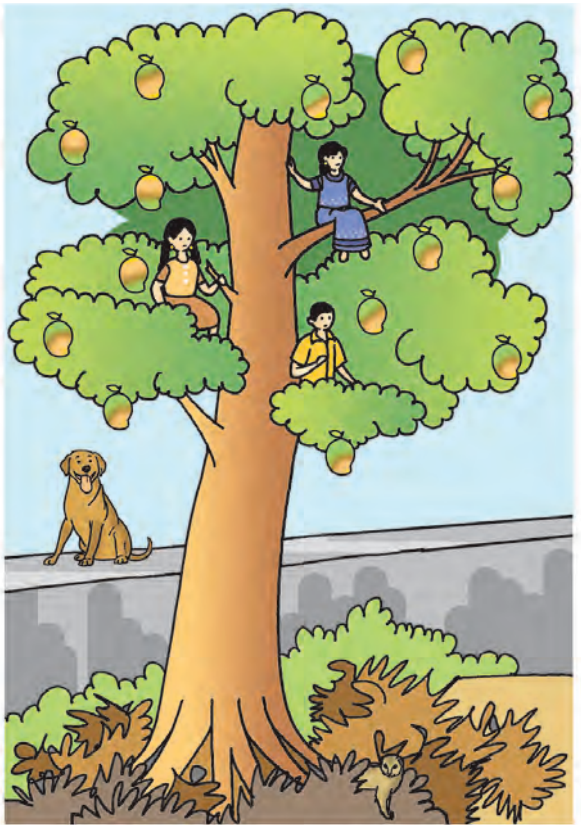

से पहले रोजी को उतार देते और फिर एक-एक करके तीनों बाहर बगीचे में उतरकर करौंदे की झाड़ियों में छिपते-छिपते अपने उसी सूने मुक्तिलोक में पहुँच जाते । तीनों में से किसी को भी कमरे में छोड़ना शंका से रहित नहीं था क्योंकि वह बिस्कुट, पेड़ा, बर्फी आदि किसी भी उत्कोच के लोभ में मुखबिर बन सकता था । परिणामतः तीनों का जाना अनिवार्य था । रोजी भी हमारे निर्बंध संप्रदाय में दीक्षित हो चुकी थी; अतः वह भी साथ आती थी । हमारे अभियान के रहस्य को वह इतना अधिक समझ गई थी कि दोपहर होते ही खिड़की से कूदने को आकुल होने लगती और खिड़की से उतार दिए जाने पर नीचे बैठकर मनोयोगपूर्वक हमारा उतरना देखती रहती । कभी खिड़की से कूदते समय हममें से कोई उसी के ऊपर गिर पड़ता था पर वह चीं करना भी नियम विरुद्ध मानती थी ।

❑ विद्यार्थियों से रेखाचित्र के आधार पर रोजी के बारे में आठ से दस वाक्य लिखवाएँ । अपनी पसंद के किसी प्राणी के बारे में बारह से पंद्रह पंक्तियों का निबंध लिखने के लिए प्रेरित करें । पाठ में आए कारक चिह्नों का प्रकारानुसार वर्गीकरण कराएँ ।

अध्ययन कौशल

किसी लेखक/कवि का परिचय पाने के लिए संकेत स्थल की जानकारी प्राप्त करो ।

ऐसे ही एक स्वच्छंद विचरण के उपरांत जब हम आम की डाल पर झूल-झूलकर अपने संग्रहालय का निरीक्षण कर रहे थे तब एक आम गिरने का शब्द हुआ और रोजी नीचे कूदी । कुछ देर तक वह पत्तियों में न जाने क्या खोजती रही फिर हमने आश्चर्य से देखा कि वह मुँह में किसी जीव को दबाए हुए ऊपर आ रही है । उस कुलबुलाते जीव को भी सुरक्षित हम तक ले आई । आकार में वह गिलहरी से बड़ा न था। भूरा चमकीला रंग, काली कत्थई आँखें, नर्म-नर्म गुलाबी नन्हा मुँह, रोओं में छिपे हुए नन्ही सीपियों से कान, सब कुछ देखकर हमें वह जीवित नन्हा खिलौना-सा जान पड़ा । रोजी ने उसे हौले से पकड़ा था परंतु बचने के संघर्ष में उसको कुछ खरोंच लग गई थी । चोट से अधिक भय से वह निश्चेष्ट था । उसे पाकर हम सब इतने प्रसन्न हुए कि उसे लेकर हम तुरंत घर की ओर भागे । वह एक नकुल शिशु था । उसका नाम हमने निक्की रखा । अब तो उस लघु प्राणी का हमारे अतिरिक्त कोई आश्रय ही नहीं रहा ।

उस समय की उत्तेजना में हम अपने अज्ञात भ्रमण की बात भी भूल गए परंतु माँ ने यह नहीं पूछा कि वह छोटा जीव हमें कहाँ और कैसे मिला । उन्होंने जीवजंतुओं को न सताने के संबध में लंबा उपदेश देने के उपरांत उसे उसके नकुल माता-पिता के पास बिल में रख आने का आदेश दिया । अतः नकुल शिशु के बिल और बिल निवासी माता-पिता की खोज में हम अनिच्छापूर्वक गए और खोज में असफल होकर निराश से अधिक प्रसन्न लौटे ।

प्रसन्नतापूर्वक हमने अपने खिलौनों के छोटे बक्स को खाली कर उसमें रूई और रेशमी रूमाल बिछाया । फिर बहुत अनुनय-विनय और सब आदेश मानने का वचन देकर रामा को, उसे रूई की बत्ती से दूध पिलाने के लिए राजी किया । इस प्रकार हमारे लघु परिवार में एक लघुतम सदस्य सम्मिलित हुआ । रामा की सतर्क देख-रेख में वह कुछ दिनों में स्वस्थ और पुष्ट होकर हमारा समझदार साथी हो गया । पालने की दृष्टि से नेवला बहुत स्नेही और अनुशासित जीव है । वह अपने पालने वाले के साथ चौबीसों घंटे रह सकता है । जेब में, कंधे पर, आस्तीन में, बालों में, जहाँ कहीं भी उसे बैठा दिया जाए, वह शांत स्थिर भाव से बैठकर अपनी चंचल पर सतर्क आँखों से चारों ओर की स्थिति देखता, परखता रहता है । निक्की मेरे पास ही रहता था ।

निक्की या तो मेरे दुपट्टे की चुन्नट में छिपा हुआ रहता या गर्दन के पीछे चोटी में छिपकर बैठता और कान के पास नन्हा मुँह निकालकर चारों ओर की गतिविधि देखता । रोजी का कार्य तो हमारे साथ दौड़ना ही था परंतु निक्की इच्छा होने पर ही अपने सुरक्षित स्थान से कूदकर दौड़ता । एक दिन जैसे ही हम खिड़की से नीचे उतरे, वैसे ही निक्की की सतर्क आँखों ने गुलाब की क्यारी के पास घास में एक लंबे काले साँप को देख लिया और वह कूदकर उसके पास पहुँच गया । हमने आश्चर्य से देखा कि निक्की पिछले दो पैरों पर खड़ा होकर साँप को मानो चुनौती दे रहा है और साँप भी हवा में आधा उठकर फुफकार रहा है ।

उस दिन प्रथम बार हमें ज्ञात हुआ कि हमारा बालिश्त भर का निक्की कई फुट लंबे साँप से लड़ सकता है । उन दोनों की लड़ाई मानो पेड़ की हिलती डाल से बिजली का खेल थी । साँप जैसे विषधर को खंड-खंड करने की शक्ति रखने पर भी नेवला नितांत निर्विष है । यदि साँप चाहे तो उसे अपनी कुंडली में लपेटकर चूर-चूर कर डाले । फण के फूत्कार से मूर्च्छित कर दे परंतु वह नेवले के फूल से हल्केपन और बिजली जैसी गति से परास्त हो जाता है ।

❑ इस पाठ में आए वर्ग के आधार पर वर्णमाला के शब्द ढूँढ़कर लिखवाएँ । इन शब्दों में कौन-कौन-से पंचमाक्षर आए हैं, इन्हें भी लिखवाएँ । इनमें से पाँच शब्दों के वाक्य प्रयोग करवाएँ । संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द ढूँढ़कर सूची बनाने के लिए कहें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

श्वान = कुत्ता
नकुल = नेवला
दुर्लभ = कठिनाई से प्राप्त
छीमियाँ = फलियाँ
विश्रामालय = आराम घर
पोखर = तालाब
चेपी = आम के ऊपर का चिपचिपा पदार्थ
मकोई = गिलोय
उत्कोच = लालच, घूस
आस्तीन = जेब
बालिश्त = बित्ता
निर्विष = विषहीन
फूत्कार = फुंकार

विचार मंथन

।। स्नेह ही स्नेह का पुरस्कार है ।।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

गणित विषय से शून्य गायब हो जाए तो .....

मेरी कलम से

अपने बचपन की कोई स्मरणीय घटना लिखो ।

बताओ तो सही

प्राणियों के गुण/स्वभाव की विशेषता समझो और कौन-से गुण तुम्हारे जीवन में उपयोगी हैं, बताओ :

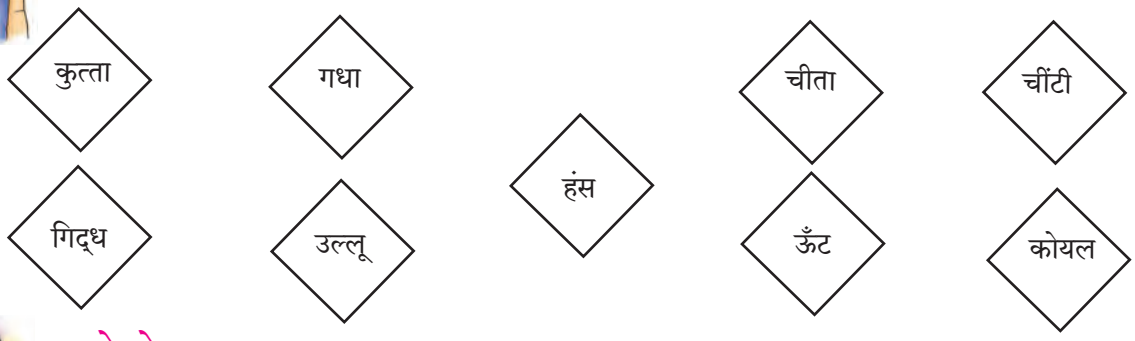

सुनो तो जरा

अपने परिवेश में मनाए गए किसी सामाजिक कार्यक्रम की रिपोर्ताज बनाकर सुनाओ :

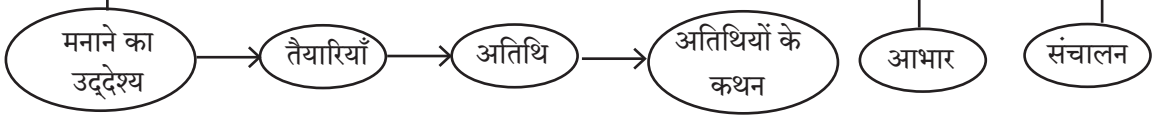

स्वयं अध्ययन

पशु चिकित्सक का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्न निर्मिति करो :

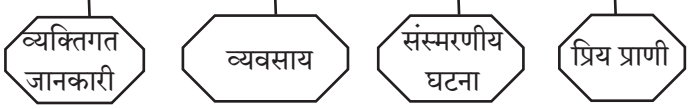

❊ **वाक्यों के क्रम का आकलन करके उनके उचित क्रम के वर्णांक रिक्त स्थान में लिखो :**

(क) निक्की मेरे पास ही रहता था ।

(ख) वह छोटी पर तेज टैरियर जाति की कुतिया थी ।

(ग) वह एक नकुल शिशु था ।

(घ) हमारे इस भ्रमण में रोजी निरंतर साथ देती थी ।

(१) ..... (२) ..... (३) ..... (४) .....

सदैव ध्यान में रखो

पशु-पक्षी भी मनुष्य की भाँति भावनाओं से परिपूर्ण होते हैं ।

भाषा की ओर

सूचनानुसार मुहावरे एवं कहावतें लिखो :

❊ निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त मुहावरों के स्थान पर इनके समानार्थक नए मुहावरे कोष्ठक में से प्रयुक्त करो –

(कान पर जूँ न रेंगना, आग बबूला होना, नौ दो ग्यारह होना)

(१) पुलिस को देखते ही चोर **रफूचक्कर हो गया ।**

(२) अध्यापक ने उसे बहुत समझाया, परंतु वह **आँखें बंद करके ही बैठी रही ।**

(३) कक्षा में शोर होता देख प्रधानाचार्य महोदय **लाल-पीले हो गए ।**

❊ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों पर उचित कहावतें कोष्ठक में से प्रयुक्त करो –

(अपना हाथ जगन्नाथ, नेकी कर दरिया में डाल, दूर के ढोल सुहावने)

(१) मैं समझता था कि शहर की जिंदगी गाँव से कहीं अच्छी होगी पर यहाँ तो कुछ भी नहीं है- सच है कि, ...

(२) सुनेत्रा ने अपनी कड़ी मेहनत से साबित कर दिया कि .....

(३) हमें उपकार के बदले कुछ अपेक्षा नहीं होनी चाहिए, बस .....

❊ **दिए गए अनुसार निम्न शब्द पहेली से मुहावरे और कहावतें ढूँढ़ो और उनके समानार्थक मुहावरे/कहावतें अपने मन से लिखो :-**

(एक शब्द का आवश्यकतानुसार एक से अधिक बार उपयोग कर सकते हैं ।)

छोटा	के	टस	जली	छठी	आम	चल	फूलकर	सहारा	मजा
ऊँट	पहाड़	न	भैंस	कुप्पा	से	जमाना	जाए	टूटना	को
होना	रंग	अधजल	का	सुनाना	आना	में	करना	की	कटी
गोद	अक्षर	हाथ	याद	चिराग	पसीना	मस	तिल	बच्चा	एक
दूध	चोर	खून	आना	क्या ?	का	गगरी	जीरा	दाँत	बेलना
गाँव	रहेगा	ताड़	दाढ़ी	बनाना	खाना	बाँस	पीसना	कंगन	बात
आरसी	रफूचक्कर	गुठलियों	छलकत	बड़ी	तिनका	ढिंढोरा	चखाना	बाँसुरी	दाम
बराबर	काला	मुँह	तले	डूबते	की	अँधेरा	तिनके	पापड़	बजेगी